

सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

श्रीमती कविता शर्मा

सहायक प्राध्यापिका एवं शोधकर्त्री

शिक्षा विभाग

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

प्रो० (डॉ०) राजकुमारी सिंह

डीन

शिक्षा विभाग

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सारांश:-

मानव के रूप में शिक्षक तथा व्यवसाय के रूप में शिक्षण कार्य पूरे विश्व में सर्वोच्च माने जाते हैं। यही कारण है कि आज तक के मानव इतिहास का श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है। समाज व विद्यालय दोनों में शिक्षक का समान महत्व है। वह समाज की अच्छी बातों का विश्लेषण करता है तथा उसे ज्ञान के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है जिसमें वर्णात्मक शोध विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा प्रस्तुत शोध में मुरादाबाद जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् शिक्षकों तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में लिया गया है। एवं आंकड़ा एकत्रित एवं निष्कर्ष निकालने के लिए शोधकर्ता द्वारा स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन तथा टी० टेस्ट का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तावना :-

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा बालक के जीवन का सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षा का अर्थ उन सभी अनुभवों से है जिनका प्रभाव जन्म से लेकर मृत्यु तक पड़ता है अर्थात् शिक्षा वह अनियन्त्रित वातावरण है जिसमें रहते हुए बालक अपनी प्रकृति के अनुसार स्वतंत्रापूर्वक नाना प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है तथा विकसित होता है।

मानव के रूप में शिक्षक तथा व्यवसाय के रूप में शिक्षण कार्य पूरे विश्व में सर्वोच्च माने जाते हैं। यही कारण है कि आज तक के मानव इतिहास का श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है। समाज व विद्यालय दोनों में शिक्षक का समान महत्व है। वह समाज की अच्छी बातों का विश्लेषण करता है तथा उसे ज्ञान के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करता है। इस प्रकार के समाज को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करने का कार्य करता है। एक बेहतर समाज के निर्माण से ही एक बेहतर राष्ट्र का भी निर्माण होता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षक न केवल समाज या विद्यालय के लिये वरन् राष्ट्र के लिये भी महत्वपूर्ण हैं।

“आचार्य देवो भव” का उद्घोष करने वाली हमारी भारतीय संस्कृति में गुरु के प्रति अत्यधिक प्रेम तथा सम्मान व्यक्त किया गया है। तथा उसे देवताओं की श्रेणी में रखा गया है। प्राचीन वैदिक काल में गुरु एवं शिष्य का जितना पाक, मधुर है। प्राचीन वैदिक काल में गुरु एवं आदरणीय सम्बन्ध पाया जाता था उतना किसी भी ऐतिहासिक काल में सुनने को नहीं मिलता। उस कार्य में गुरु एवं शिष्य का सम्बन्ध किसी संस्था के माध्यम से नहीं उन्हीं के माध्यम से था। शिक्षक के प्रति छात्र में गुरु या आचार्य को छात्र का मानस पिता माना जाता था तथा उस पर अपने विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक विकास का उत्तरदायित्व था। उस काल में शिक्षकों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति राजाओं तथा समाज के अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा की जाती थी। अतः वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये निश्चिन्त थे तथा निर्विघ्न व निस्काय भाव से शिक्षा प्रदान करते थे। उस काल में राजा व रंक दोनों ने शिक्षकों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने में स्पर्धा की है। अतः उस समय गुरुजन आर्थिक पूर्णता के साथ-साथ मानसिक व संवेगात्मक रूप से भी संतुष्ट थे।

भारत में सन् 1192 में मुस्लिम साम्राज्य का उदय हुआ व इसके आगमन से शिक्षा प्रणाली भी प्रभावित हुए बगैर नहीं रह सकी। वैदिक कालीन आदर्शों का धीरे-धीरे लोप होने लगा। यद्यपि मुस्लिम धर्म में शिक्षा प्रदान करने को बहुत महत्व दिया गया है। परन्तु दुर्भाग्य वश भारत में मुस्लिम शासकों ने शिक्षा के प्रति विशेष रुचि नहीं ली। शिक्षा के प्रति लौकिक दृष्टिकोण होने के कारण शिक्षक की स्थिति में परिवर्तन हो गया था सामान्य जनता की दृष्टि में शिक्षक

का महत्व कम हो गया था यद्यपि विद्यार्थी अपने गुरु के प्रति विनम्र होते थे तथा उनकी आज्ञा का पालन करना अपना कर्तव्य समझते थे। ऐसी स्थिति में जबकि शिक्षक को समाज में विशेष सम्मान प्राप्त नहीं था उनकी दैनिक आवश्यकताएं ही उनके सम्मुख एक प्रश्न चिह्न बन गईं तथा वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चिन्तित रहते थे। अतः उनको अपनी स्थिति से असंतुष्ट होना स्वभाविक था। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ-साथ मध्यकालीन शिक्षा का पतन प्रारम्भ हो गया तथा आधुनिक शिक्षा का श्रीगणेश हुआ।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन:-

गुड 1930 ने अपने अध्ययन में पाया कि लोग तीन तत्वों से प्रभावित होकर शिक्षण का कार्य करते हैं ये हैं विषय में रुचि माध्यमिक स्कूल के बालकों में रुचि तथा दूसरों की सेवा करने का अवसर वैपक 1993 और रोशोर्क 1971 ने अपने अध्ययन में कृत्य संतुष्टि तथा आय में धनात्मक सम्बन्ध बताया।

थामस 1950 ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि महिला अध्यापिकायें पुरुष अध्यापकों से अधिक असंतुष्ट थीं। उनका अपने कार्य के प्रति तथा सहयोगियों के प्रति संतुष्टि में निम्न सहसम्बन्ध पाया गया। यह सह सम्बन्ध थॉमस तथा रिचर्ड 1963 के अध्ययनों में क्रमशः 0.96 था। काफकमैन 1951 और इकैण्ट 1951 ने पाया कि कृत्य संतुष्टि वेतन से सम्बन्धित है। भारतीय प्रतिदर्श पर किये गये अनेक अध्ययनों में वित्तीय पक्ष को बहुत अधिक दिया गया है तथा इसको कृत्य संतुष्टि से सम्बद्ध किया गया है।

चेज 1951 और ग्रीनवर्ग 1970 ने अध्ययन में पाया कि कार्य के प्रति असंतुष्टि का प्रमुख कारण कार्य की दशाओं के प्रति असंतुष्ट होना बताया गया।

त्रक्रीड और गाडेल 1953 के अध्ययन में पता चलता है कि कृत्य संतुष्टि व आत्मा-अभिव्यक्ति के अवसरों की आवृत्तियों में धनात्मक सम्बन्ध है।

गेस्ट 1954 और सालविवान 1951 ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक विगलता व सामाजिक अन्तः क्रिया की कमी अध्यापकों में कृत्य संतुष्टि की मात्रा में वृद्धि करते हैं।

मिश्रा 1957 और ठक्कर 1959 ने यह निष्कर्ष निकाला कि पुरुषों के लिये शिक्षण एक ऐसा कार्य है जिसमें कोई अवरोध या प्रतिबन्ध नहीं है। भारतीय प्रतिदर्श पर किये गये अध्ययन से ज्ञात होता है कि उन्नति के अवसरों को समस्या की श्रेणियों में सूचिवद्ध किया गया है।

अन्सारी 1950 वर्मा 1958 वशिष्ठ 1958 गुप्ता कुमारीलाल 1961 ओर राव 1970 ने अपने अध्ययनों में समान परिणाम प्राप्त किये। प्रत्येक स्तर के शिक्षक आयु, अनुभव, शिक्षा तथा संगठन के अन्तर को न मानते हुये उन्नति के अवसरों में कमी के कारण असंतुष्ट थे।

सिटसकोन सागर 1959 ने अपने अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि वेतन के प्रति असंतुष्टि से शिक्षण योग्यता पर प्रभाव पड़ता है।

हैरोप 1959 ने पाया कि माध्यमिक स्कूल के शिक्षक प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों से उन्नति के अवसरों पर संदर्भ में अधिक असंतुष्ट है। किर्क बेट्रिक 1960 ओर बटलर 1961 ने बताया कि कार्य के प्रति पूर्ण संतुष्टि कार्य की दशाओं के प्रति संतुष्टि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित है। सिंह 1960 कुमारी 1967 राज 1970 ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि पुरुष अध्यापक निम्न वेतन के कारण महिला अध्यापिकाओं से अधिक असंतुष्ट थे।

आदित्य नीता (1989) ने प्राथमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न संगठनों में कार्यरत प्राथमिक स्तर के पुरुष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर में विभिन्नता का अध्ययन करना था।

1. प्राथमिक स्तर के पुरुष व महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकार व शिशु मन्दिर विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के स्तर में अन्तर पाया जाता है।

शर्मा वी0 (1989) ने मेरठ वि0 वि0 में शिक्षकों की अभिप्रेरणा प्रणाली का सम्बन्ध शैक्षिक अभिवृत्ति एवं व्यवसायिक संतुष्टि से करने हेतु देहरादून के 200 शिक्षकों के अभिप्रेरण, व व्यवसायिक संतुष्टि के अध्ययन में पाया कि -

1. ग्रामीण व शहरी एवं अनुभव कम व अधिक होने से शिक्षकों की अभिवृत्ति पर कोई अन्तर नहीं पड़ता है।
2. महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

3. महिला व पुरुष शिक्षकों की अभिप्रेरणा – प्रवृत्ति में भी महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

जोशी प्रेम कुमारी (1985) ने ईसाई और गैर ईसाई प्रबन्ध तन्त्र के माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों द्वारा प्रकट की थी अभिवृत्ति तथा व्यवसायिक सम्बन्धी का अध्ययन किया इसका न्यादर्श 800 था तथा 32 संस्थाओं पर अध्ययन किया। इसके निष्कर्ष थे –

1. भिन्न प्रबन्धतन्त्र की कार्य दशायें भिन्न होती है।
2. शिक्षक की अभिवृत्ति निम्न तन्त्र में भिन्न होती है।
3. ईसाई प्रबन्धित संस्थाओं में दिन प्रतिदिन के कार्य कलाप में हस्तक्षेप नहीं होता।
4. इसके प्रधानाध्यापकों का व्यवहार अधिक उपयुक्त होता है।
5. ईसाई प्रबन्ध तन्त्र अपनी संस्था तथा समुदाय को अधिक पसन्द करते हैं।

सिंह (1988) ने छात्रों की उपलब्धि पर आवासीय जगह के प्रभाव का अध्ययन किया अध्ययन के द्वारा छात्रों की उपलब्धि स्तर पर स्थान के प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य के साथ 17 से 20 साल की आयु सीमा के भीतर 650 किशोरों का एक नमूना ले रही है और पाया कि शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि थी।

राजपूत (1989) शैक्षिक आकंक्षा और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन :- उद्देश्य से माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर परिवार के कारकों के प्रभाव की जांच करने के लिए 1000 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का एक नमूना लेने के द्वारा किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना तकनीक के माध्यम से छात्रों में पाया की छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अपने माता पिता के प्रोत्साहन के अनुपात में प्रभावित किया गया था, वहाँ छात्रों का शैक्षणिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्थिति से प्रभावित था परिवार, शैक्षणिक उपलब्धि अपने परिवार के वातावरण से प्रभावित था।

त्रिपाठी (1991) उपलब्धि प्रेरणा ओर उच्च विद्यालय के बीच सम्बन्ध का अध्ययन :- शैक्षिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करने के उद्देश्य के साथ छात्रों के माध्यम से चयनित 445 नौवी कक्षा के छात्रों का एक नमूना लेने के द्वारा उपलब्धि प्रेरणा के लड़कों को आमतौर पर जो बेहतर थे कि पता चला समायोजित लड़को और लड़कियों की उपलब्धि प्रेरणा अत्यधिक खुफिया के साथ सहसम्बद्ध था और उपलब्धि प्रेरणा के अन्य सम्बन्ध के अलावा शैक्षिक उपलब्धि जाहिर है सबसे प्रमुख कारक साबित हुई है।

टेलर फ्रांसिस (1992) :- ने शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता तथा उनकी क्षमता की पहचान का अध्ययन किया। इस अध्ययन में शिक्षकों की क्षमता की पहचान तथा उनकी शिक्षण वचनबद्धता की जांच की गई जिनके निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

सामान्य व्यक्ति क्षमता वाले अध्यापकों की शिक्षण वचनबद्धता अधिक पाई गई। वचनबद्ध शिक्षकों में धनात्मक शिक्षक छात्र सम्बन्ध भी पाया गया। महिला शिक्षकों में शिक्षण वचनबद्धता पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

आदित्य नीता (1989) : ने प्राथमिक स्तर में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न संगठनों में कार्यरत प्राथमिक स्तर के पुरुष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर में विभिन्नता का अध्ययन करना था।

1. प्राथमिक स्तर के पुरुष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकार व शिशु मन्दिर विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर में अन्तर जाया जाता है।

शर्मा वी0 (1989) ने मेरठ वि0 वि0 में शिक्षकों की अभिप्रेरणा प्रणाली का सम्बन्ध शैक्षिक अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि से करने हेतु देहरादून के 200 शिक्षकों के अभिप्रेरण, व व्यावसायिक संतुष्टि के अध्ययन में पाया कि –

1. ग्रामीण व शहरी एवं अनुभव कम व अधिक होने से शिक्षकों की अभिवृत्ति पर कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला तथा पुरुष शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के सेवारत् शिक्षकों विद्यालयों में की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला तथा पुरुष शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

4. उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में सेवारत् शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला तथा पुरुष शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि करना।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

समस्या कथन :-

“सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन”।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:-

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा सकारात्मक होती है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, तथा शहरी शिक्षकों की प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता सकारात्मक तथा पुरुषों की नकारात्मक होती है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता नकारात्मक तथा शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रतिबद्धता सकारात्मक होती है।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सकारात्मक तथा पुरुषों की नकारात्मक होती है।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में सेवारत् शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि नकारात्मक तथा शहरी क्षेत्र में सेवारत् शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि सकारात्मक होती है।
7. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सकारात्मक होती है।
8. उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् पुरुष शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि नकारात्मक होती है।
9. उच्च माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि नकारात्मक होती है।
10. उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सकारात्मक होती है।

अध्ययन में प्रयोग किये गये चर :-

- स्वतन्त्र चर:- शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक संतुष्टि।
- परतन्त्र चर:- शैक्षिक उपलब्धि।
- भोध विधि:- प्रस्तुत शोध हेतु वर्णात्मक शोध विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- समष्टि:- प्रस्तुत शोध में मुरादाबाद जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् शिक्षकों तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में लिया गया है।
- प्रतिदर्श :- प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन तथा टी0 टेस्ट का प्रयोग किया जायेगा।

शोध उपकरण :-

प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता ज्ञात करने के लिए डा0 रविन्द्र कौर, डा0 सर्वजीत कौर रानू तथा श्रीमती सर्वजीत कौर बरार द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत Professional Commitment for

teachers का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की शैक्षिक व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का अध्ययन करने के लिए डा0 प्रमोद डी0ए0 मुथा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालयों से विद्यार्थियों की अंकतालिका प्राप्त करके शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जायेगा।

परिसीमांकन :-

1. प्रस्तुत शोध में केवल मुरादाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के 200 शिक्षकों तथा 800 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के शिक्षकों को सम्मिलित किया जायेगा।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष:-

उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों का अध्ययन है।

परिकल्पना-1 :- उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा सकारात्मक होती है।

तालिका सं0-1

लिंग के आधार पर प्राप्त आंकड़ों का परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	"टी" का परिकलित मान	"टी" का सारणी मान	सार्थक का स्तर	परिणाम
शिक्षक	100	189.59	9.34	5.48	1.96	0.05	अस्वीकृत
शिक्षिकाएँ	100	179.43	16.43		2.58	0.01	अस्वीकृत

उपरोक्त तालिका के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता पुरुष शिक्षकों से कम पायी गयी है। इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों के अनुसार परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना-2 :- उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता, तथा शहरी शिक्षकों की प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

तालिका सं0-2

क्षेत्र के आधार पर प्राप्त आंकड़ों का परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	"टी" का परिकलित मान	"टी" का सारणी मान	सार्थक का स्तर	परिणाम
ग्रामीण शिक्षक	100	184.70	14.68	0.20	1.96	0.05	अस्वीकृत
शहरी शिक्षक	100	184.31	13.47		2.58	0.01	अस्वीकृत

उपरोक्त तालिका के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत् ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा शहरी शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिए इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों के आधार पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है। उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि से सम्बन्धित आंकड़ों का अध्ययन

तालिका सं0-3

भाहरी क्षेत्र के आधार पर प्राप्त आंकड़ों का परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	"टी" का परिकलित मान	"टी" का सारणी मान	सार्थक का स्तर	परिणाम
शिक्षक	50	23.22	2.77	1.19	1.96	0.05	स्वीकृत
शिक्षिकाएँ	50	23.92	3.10		2.58	0.01	स्वीकृत

उक्त तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत शहरी क्षेत्र के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के माध्यमान के आधार पर कार्य संतुष्टि ज्ञात करने पर यह दृष्टिगोचर हुआ कि शिक्षक अपने कार्य के प्रति शिक्षिकाओं से कम संतुष्टि को व्यक्त करते हैं तथा शिक्षिकाएँ अपने कार्य से शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं।

तालिका सं०-4

ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर प्राप्त आंकड़ों का परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	"टी" का परिकलित मान	"टी" का सारणी मान	सार्थक का स्तर	परिणाम
शिक्षक	50	20.82	2.19	1.24	1.96	0.05	स्वीकृत
शिक्षिकाएँ	50	20.26	2.33		2.58	0.01	स्वीकृत

उक्त तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर पर सेवारत ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के माध्यमान के आधार पर कार्य संतुष्टि ज्ञात करने पर यह दृष्टिगोचर हुआ कि शिक्षक अपने कार्य के प्रति शिक्षिकाओं से कम संतुष्टि को व्यक्त करते हैं तथा शिक्षिकाएँ अपने कार्य से शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. शर्मा, आर०ए०, : शिक्षा अनुसन्धान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
2. भाटिया, के०के० : शिक्षा के सिद्धान्त, कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. कौल, लोकेश : शैक्षिक अनुसन्धान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा०लि०, नई दिल्ली।
4. बुच, एम०वी० : ए टू सिक्स्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
5. जैन, साह, (2005) : मध्य प्रदेश में मध्याह्न भोजन योजना- (समाज प्रगति सहयोग)।
6. माथुर, बिना (2005) : राजस्थान में मध्याह्न भोजन योजना कार्यक्रम की स्थिति का विश्लेषण (राजस्थान विश्वविद्यालय एवं यूनिसेफ)।
7. नाइक, राम (2007) : कर्नाटक के अक्षर दसोहा योजना पर प्रतिवेदन - (धारवाड विश्वविद्यालय, कर्नाटक)।
8. N. C. E. R. T. : www.ncert.com
9. Mid Day Meal : www.middaymeal.com
10. Ele. Education : www.elementaryeducation.com